झुमका गिरा रे , बरेली के बाजार में...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिन्दी फिल्मों की सफलता में गीतों का बड़ा महत्त्व होता है और इसीलिए गीतकारों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है. आज हम जिस गीतकार की चर्चा कर रहे हैं, मुमकिन है उनका नाम आज की पीढ़ी के लिये कम जाना पहचाना हो पर उनके लिखे यादगार गीतों की फेहरिस्त देखकर आपको यक़ीन हो जायेगा कि निसंदेह वो एक महान गीतकार थे, उनके लिखे ज्यादातर गीत सुपर हिट भी हैं और उत्कृष्ट भी हैं, वो फ़िल्म संगीत के उन चुनिंदा गीतकारों में से थे, जिनका हर गीत खरा सोना है. उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से श्रोताओं के दिलों में स्थायी जगह बनाई और आज भी उनके लिखे गीत अत्यंत लोकप्रिय हैं. आज हम बात कर रहे हैं दिग्गज गीतकार और शायर राजा मेहदी अली खान की, जो हिन्दी सिनेमा के उन महान गीतकारों में से थे, जिनके गीतों ने इंसानी जज़्बात को अपने शब्दों से अमर कर दिया. उनकी शायरी अपनी सादगी और गहराई की वजह से दिल को छू जाती है.

राजा मेहदी अली खान पाकिस्तान के करीमाबाद के एक जानेमाने ख़ानदान में 1915 में पैदा हुए. उनकी माँ हेबे साहिबा एक ज़हीन शायरा थीं, कहते हैं कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' लिखने वाले महान शायर अल्लामा इकबाल भी हेबे साहिबा की शायरी को सम्मान देते थे. यानी शायरी मेहदी अली के ख़ून में थी, इसलिए उन्हें भी बचपन से ही उर्दू शायरी से गहरा लगाव था. वो बड़े हुए तो दिल्ली आकर ऑल इंडिया रेडियो में काम करने लगे, वहीं पर 1942 में उनकी मुलाक़ात मशहूर उर्दू लेखक सआदत हसन मंटो से हुई . बाद में मंटो बंबई चले गए और फिर उनको भी वहीं बुला लिया. उनकी सिफारिश पर ही राजा मेहदी अली को पहली बार फिल्म 'आठ दिन' के संवाद लेखक का काम मिला, साथ ही उन्हें इस फ़िल्म में अभिनय का भी मौका मिला. प्रसिद्ध निर्माता एस मुखर्जी ने 1946 में बनी अपनी फिल्म 'दो भाई' में पहली बार उन्हें गीत लिखने का अवसर दिया, एस.डी. बर्मन के संगीत से सजी इस फिल्म के उनके लिखे गाने 'मेरा सुंदर सपना बीत गया' और 'याद करोगे याद करोगे ' सुपर हिट साबित हुए. थोड़े ही समय में मेहदी अली खान ने फ़िल्मों की दुनिया में एक बेहतरीन गीतकार के रूप में अपनी जगह बना ली. 1947 में विभाजन के बाद राजा मेहदी अली और उनकी पत्नी ताहिरा ने नवगठित पाकिस्तान जाने की बजाय हिंदुस्तान में ही रहने का फैसला किया. वर्ष 1948 में दिलीपकुमार अभिनीत फिल्म 'शहीद' में ग़ुलाम हैदर के संगीत में उनके लिखे देशभक्ति गीत 'वतन की राह में वतन के नौजवां शहीद हो' और 'तेरी ऐसी की तैसी 'खूब लोकप्रिय हुऐ . खासकर 'वतन की राह में वतन' गीत उस समय भारत के बच्चे बच्चे की ज़ुबान पर था.

राजा मेहदी अली ख़ान ने हिंदी सिनेमा में गीतकार के रूप में 1940 के दशक के अंत में कदम रखा परन्तु उन्हें असली पहचान 1950 और 60 के दशक में मिली, जब उन्होंने कई यादगार गीत लिखे. यूँ तो उन्होंने उस दौर के कई बड़े संगीतकारों गुलाम हैदर, एस.डी. बर्मन, खेमचंद प्रकाश, एस एन त्रिपाठी, ओ पी नैयर, मदन मोहन, श्याम सुन्दर, चित्र गुप्त, सी रामचंद्र, लक्ष्मी कांत प्यारेलाल, उषा खन्ना आदि के साथ काम किया, लेकिन उनकी जोड़ी विशेष रूप से महान संगीतकार मदन मोहन के साथ बेहद कामयाब रही. इस बेमिसाल जोड़ी ने कई

ऐसे नायाब गीत दिए जो संगीत प्रेमियों के दिलों में स्थाई रूप से बस गये. एक महत्वपूर्ण बात और, इस जोड़ी के अधिकतर गीतों को महान गायिका लता मंगेशकर ने अपनी मधुर आवाज दी, इस कारण भी उनके गीत अविस्मरणीय हो गये. लता जी मदन मोहन और राजा मेहदी अली ख़ान दोनों को राखी बांधती थीं.

राजा मेहदी अली खान और मदन मोहन की जोड़ी के कुछ अनमोल गीत देखिये, 'लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो', 'नैना बरसे रिमझिम रिमझिम ', 'जो हमने दास्तां अपनी सुनाई', 'छोड़ कर तेरे प्यार का दामन', 'शोख नज़र की बिजलियां दिल पे मेरे गिराए जा' (वो कौन थी), 'आपकी नजरों ने समझा', 'जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया', 'है इसी में प्यार की आबरू', 'वो देखो जला घर किसी का' (अनपढ़), 'झुमका गिरा रे बरेली के बाज़ार में', 'तू जहाँ जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा', 'आपके पहलू में आकर रो दिए' (मेरा साया), 'अगर मुझसे मोहब्बत है', 'मैं निगाहें तेरे चेहरे से हटाऊँ', कैसे', 'यही है तमन्ना तेरे दर के सामने मेरी जान जाए' (आपकी परछाईयां), 'हमें हो गया तुमसे प्यार ', 'मेरी याद में तुम ना आँसू बहाना' (मदहोश), 'आखिरी गीत मोहब्बत का सुना लूं', 'आप को प्यार छुपाने की बुरी आदत है', 'तेरे पास आ के मेरा वक्त गुजर जाता है' (नीला आकाश), 'सपनों में अगर मेरे तुम आओ', 'कई दिन से जी है बेकल', 'एक हसीं शाम को दिल मेरा खो गया' (दुल्हन एक रात की), 'क्यों मेरे दिल को करार आता नहीं', 'तेरे बिन सावन कैसे बीता', 'अरी ओ शोख कलियों मस्कुरा देना' (जब याद की किसी की आती है) आदि . संगीतकार ओ पी नैयर के साथ भी उन्होंने कुछ कमाल के गीतों की रचना की, 'अकेला हूँ मैं हमसफ़र ढूँढता हूँ', 'चाँद ज़र्द ज़र्द है', 'रात सर्द सर्द है' (जाली नोट), 'पूछो ना हमें हम उनके लिये' (मिट्टी में सोना), 'आप यूँ ही अगर हमसे मिलते रहे', 'मैं प्यार का राही हूँ' (एक मुसाफिर एक हसीना) आदि .

इनके अलावा भी उन्होंने कई अविस्मरणीय गीत लिखे , 'वतन की राह में वतन के नौजवाँ शहीद हो' (शहीद), 'भगवान तुझे मैं खत लिखता' (मनचला), 'गर्दिश में हो तारें, न घबराना प्यारे', 'जुल्फों की घटा लेकर सावन की परी आई' (रेशमी रुमाल), 'मैं देखूँ जिस और सखी री', 'तुम बिन जीवन कैसे बीता', 'करीब आ ये नज़र फिर मिले न मिले' (अनीता) आदि.

सरल भाषा,उर्दू और हिन्दी का सुंदर मिश्रण,गहरी भावनात्मक अभिव्यक्ति, मोहब्बत और जुदाई का सजीव चित्रण उनकी लेखनी की खासियत थी, उनके गीतों में दर्द, नज़ाकत और मोहब्बत की गहराई एक साथ झलकती है .उन्होंने 125 फिल्मों के लिए लगभग 450 से अधिक गीत लिखे. उन्होंने फिल्मों में हर सिचुएशन के लिये विविधता पूर्ण गीत लिखे, 'झुमका गिरा रे बरेली के बाजार में' जैसे मस्ती भरे गीत से ले कर 'लग जा गले कि फिर ये हंसी रात हो न हो' जैसा रुमानी गीत और 'जो हमने दास्तां अपनी सुनाई आप क्यूँ रोये' जैसे मार्मिक गीत इसका उदाहरण हैं .

राजा मेहदी अली खान ने अपने गीतों में 'आप' शब्द का इस्तेमाल बहुत हीं खूबसूरती से किया है .इन गीतों में 'आप यूं ही अगर हमसे मिलते रहे देखिये' 'आपके पहलू में आकर रो दिये', 'आपकी नजरो ने समझा प्यार के काबिल , 'आपको राज छुपाने की बुरी आदत है ', 'जैसे कई सुपरहिट गीत शामिल हैं . राजा मेहदी अली ख़ान के दो कविता संग्रह भी प्रकाशित हुए - 'अन्दाज़-ए-बयां और', तथा 'मिज़राब'. उनका जीवन अपेक्षाकृत छोटा रहा,वर्ष 1966 में उनका निधन हो गया. अपने छोटे से जीवन में उन्होंने जो यादगार गीत लिखे वो आज भी संगीत प्रेमियों के दिलों में ज़िंदा हैं और हमेशा ज़िंदा रहेंगे. अपनी मृत्यु से सिर्फ़ दो साल पहले उन्होंने फ़िल्म 'वो कौन थी' के लिए संगीतकार मदन मोहन के संगीत में अपनी ज़िंदगी का ये सबसे अमर गीत लिखा, जो आज की पीढ़ी में भी काफ़ी लोकप्रिय है और रियलिटी शोज में खूब गाया जाता है,

'लग जा गले कि फिर ये हंसी रात हो न हो
शायद फिर इस जनम में मुलाक़ात हो न हो',

राजा मेहदी अली ख़ान का नाम सदैव हिंदी फ़िल्म संगीत के स्वर्णिम युग के महान गीतकारों में शामिल किया जाएगा .आज की बात यहीं तक,अगले सप्ताह फिर मिलेंगे, तब तक राजा मेहदी अली ख़ान साहब के यादगार गीतों का

57 वर्ष के हुए अजय देवगन

बॉलीवुड के जानेमाने अभिनेता-फिल्मकार अजय देवगन आज 57 वर्ष के हो गये. अजय देवगन (मूल नाम विशाल देवगन) का जन्म दिल्ली में 02 अप्रैल 1969 को हुआ था. उनके पिता वीरू देवगन हिंदी फिल्मों के नामी स्टंट मैन थे जबकि उनकी मां वीणा देवगन ने एक-दो फिल्मों का निर्माण किया था. घर में फिल्मी माहौल के होने कारण अजय देवगन की रुचि भी फिल्मों की ओर हो गयी और वह फिल्म निर्देशक बनने का सपना देखने लगे.

अजय ने स्नातक की पढ़ाई मुंबई के मिट्ठी भाई कॉलेज से पूरी की. इसके बाद वह फिल्म निर्देशक शेखर कपूर के साथ सहायक निर्देशक के रूप में काम करने लगे. इसी दौरान उनकी मुलाकात कुक्कु कोहली से हुई, जो उन दिनों नई फिल्म 'फूल और कांटे' के निर्माण में व्यस्त थे और एक ऐसे अभिनेता की तलाश में थे जो रूमानी भूमिका के साथ-साथ एक्शन दृश्य भी कर सके. इस दौरान उन्होंने अजय देवगन के बारे में सुना कि वह एक्शन और डांस करने में माहिर हैं और उन्होंने उनसे फिल्म का नायक बनने की पेशकश की. अपनी पहली ही फिल्म की सफलता के बाद अजय देवगन दर्शकों के बीच अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो गए.

'फूल और कांटे' की सफलता के बाद अजय देवगन की छवि एक्शन हीरो के रूप में बन गयी. इस फिल्म के बाद निर्माता निर्देशकों ने अधिकतर फिल्मों में उनकी एक्शन हीरो वाली छवि को भुनाया. इन फिल्मों में 'जिगर', 'दिव्य शक्ति', 'प्लेटफॉर्म', 'शक्तिमान' और 'एक ही रास्ता' जैसी फिल्में शामिल थीं.नब्बे के दशक में अजय देवगन पर यह आरोप लगने लगे कि वह केवल मारधाड़ और एक्शन से भरपूर फिल्में ही कर सकते हैं. उन्हें इस छवि से बाहर निकालने में निर्माता-निर्देशक इंद्र कुमार ने मदद की. उन्होंने अजय देवगन को लेकर 1997 में फिल्म 'इश्क' का निर्माण किया. जिसमें उन्होंने अजय देवगन से हास्य अभिनय कराकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया.

वर्ष 1998 अजय देवगन के सिने करियर का महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ. इस वर्ष उन्हें महेश भट्ट की फिल्म 'जख्म' में काम करने का अवसर मिला. इस फिल्म में वह अपने दमदार अभिनय से न सिर्फ दर्शकों बल्कि समीक्षकों का दिल जीतने में भी सफल रहे. इस फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. वर्ष 1998 में ही अजय देवगन के सिने करियर की एक और हिट फिल्म 'मेजर साब' प्रदर्शित हुई.

'मर्दानी 3' ओटीटी पर भी सुपरहिट

नेटफ्लिक्स इंडिया पर बनी नंबर 1 फिल्म

यश राज फिल्म्स की सुपरहिट फिल्म मर्दानी 3, नेटफ्लिक्स इंडिया पर नंबर 1 फिल्म बन गई है. रानी मुख़र्जी की फिल्म 'मर्दानी 3' की सफलता ने इस ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइज़ी की तीनों फिल्मों को टॉप 10 फिल्मों की सूची में जगह दिला दी है.

'मर्दानी 3' (2026) नंबर 1 स्थान पर है, पहली 'मर्दानी' (2014) नंबर 5 पर और 'मर्दानी 2' (2019) नंबर 7 पर नेटफ्लिक्स इंडिया पर ट्रेंड कर रही हैं. यह इस बेहद सराही गई फ्रेंचाइज़ी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है, जो देश की एकमात्र सफल महिला-प्रधान फिल्म फ्रेंचाइज़ी भी है.

'मर्दानी 3' ने भारत में 53 करोड़ रुपये से अधिक का नेट कलेक्शन किया और यह इस फ्रेंचाइज़ी की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई. इसके साथ ही, इसने सिनेमाघरों में 50 दिन पूरे किए, जो आज के समय में किसी भी फिल्म के लिए एक दुर्लभ उपलब्धि मानी जाती है.

ओपनिंग डे पर 'मर्दानी 3' ने सभी उम्मीदों को पार करते हुए मर्दानी फ्रेंचाइज़ी और रानी मुखर्जी की सोलो फिल्म के लिए सबसे बड़ी ओपनिंग दर्ज की. फिल्म ने पहले दिन चार करोड़ रुपये का कलेक्शन कर भारत में महिला-प्रधान फिल्मों के लिए एक शानदार शुरुआत की थी .

इंडस्ट्री विश्लेषकों का मानना है कि 'मर्दानी' फिल्मों के आसपास बढ़ती चर्चा थिएट्रिकल रिलीज़ और ओटीटी प्लेटफॉर्म के बीच बढ़ते तालमेल को दर्शाती है, जहां मजबूत वर्ड-ऑफ-माउथ और क्रिटिकल सराहना पाने वाली फिल्में स्ट्रीमिंग पर लंबे समय तक दर्शकों को आकर्षित करती हैं. इस फ्रेंचाइज़ी की सफलता यह भी साबित करती है कि मजबूत कहानी और दमदार महिला किरदारों वाली भारतीय फिल्मों की स्थानीय और वैश्विक स्तर पर बड़ी मांग है.

'मर्दानी' फ्रेंचाइज़ी कहानी कहने की उत्कृष्टता और दर्शकों से जुड़ाव का एक बेंचमार्क बन चुकी है और भारतीय सिनेमा की सबसे प्रभावशाली सीरीज में अपनी मजबूत जगह बना चुकी है.

निर्देशक अभिराज मीनावाला और निर्माता आदित्य चोपड़ा के साथ 'मर्दानी 3' इस फ्रेंचाइज़ी की सामाजिक रूप से प्रासंगिक और दमदार कहानी कहने की विरासत को आगे बढ़ाती है. 'मर्दानी' अब 12 वर्षों से एक स्थापित थिएट्रिकल प्रॉपर्टी बन चुकी है, खासकर ऐसे जॉनर में जो पारंपरिक रूप से पुरुष सितारों के दबदबे में रहा है.

रानी मुखर्जी ने अपने करियर के 30वें वर्ष में एक बार फिर सोलो थिएट्रिकल सफलता हासिल की है, जो उनकी लंबी उम्र और बॉक्स ऑफिस पर निरंतर विश्वसनीयता को दर्शाने वाला एक दुर्लभ मुकाम है.

इस शानदार सफलता के साथ, 'मर्दानी' सीरीज ने हिट फिल्मों की हैट्रिक पूरी कर ली है और यह भारत की एकमात्र सफल महिला-प्रधान फ्रेंचाइज़ी होने के साथ-साथ भारतीय सिनेमा के इतिहास की एकमात्र हिट महिला-पुलिस फ्रेंचाइज़ी भी बनी हुई है.

टेलीविजन हलचल

पुलिस के जज़्बे को दिखाएंगे सोनाक्षी और फरमान

'जगद्धात्री' अपने जबर्दस्त ट्विस्ट और हाई वोल्टेज ड्रामा के साथ दर्शकों को लगातार जोड़े हुए है . हाल ही में होली का ट्रैक दर्शकों को चौंका गया, जब कहानी में एक बड़ा मोड़ आया और शिवाय को गोली मार दी गई . जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, जगद्धात्री इस हमले के पीछे की सच्चाई जोड़ने लगती है और अपनी टीम के साथ मिलकर इसके मास्टरमाइंड को पकड़ने निकल पड़ती है . जांच के दौरान उसे पता चलता है कि शिवाय पर गोली चलाने के पीछे रुद्र का हाथ है . सच सामने आने के बाद जगद्धात्री उसे सजा दिलाने के लिए खुद आगे आती है और उससे भिड़ने की तैयारी करती है . यह ट्रैक एक जबर्दस्त टकराव का वादा करता है, जो दर्शकों को बांधे रखेगा . साथ ही, इस कहानी के जरिए पुलिस के जज़्बे को भी मजबूती से दिखाया जाएगा, जो हर हाल में डटे रहते हैं और सच और न्याय के लिए लगातार लड़ते हैं . 'जगद्धात्री' में जगद्धात्री का किरदार निभा रहीं सोनाक्षी बत्रा कहती हैं, 'आने वाले एपिसोड बेहद इंटेंस और इमोशनल होने वाले हैं . जगद्धात्री ऐसा किरदार है जो सच और न्याय के लिए हमेशा मजबूती से खड़ी रहती है, और इस बार मामला उसके लिए बहुत निजी है . जैसे ही उसे रुद्र के बारे में सच्चाई पता चलती है, उसका एक ही मकसद होता है कि उसे उसके किए की सजा मिले . साथ ही, यह ट्रैक एक पुलिस ऑफिसर की ताकत और जज़्बे को भी दिखाता है . हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों, वे हमेशा उठ खड़े होते हैं और सही के लिए लड़ते रहते हैं .

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर कलाकारों के फिटनेस मंत्र

आज की तेज-रफ्तार जिंदगी में, जहाँ व्यस्त दिनचर्या अक्सर सेहत पर भारी पड़ती है, वहीं विश्व स्वास्थ्य दिवस फिटनेस और आत्म-देखभाल पर ध्यान देने की याद दिलाता है. टेलीविजन कलाकार, अपनी व्यस्त शूटिंग के बावजूद, सरल लेकिन प्रभावी तरीकों से अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हैं . अंकित मोहन कहते हैं कि अनुशासन और निरंतरता ही स्वस्थ जीवनशैली की नींव हैं . वे कहते हैं, 'मेरे लिए फिटनेस का मतलब कठिन दिनचर्या नहीं बल्कि रोज़ाना निरंतर बने रहना है . शूटिंग का समय अनिश्चित होता है, लेकिन मैं हर दिन कम से कम 30 मिनट फंक्शनल वर्कआउट और स्ट्रेंथ ट्रेनिंग के लिए निकालता हूँ . मुझे बाहर दौड़ना या खेलना भी पसंद है, जिससे फिटनेस मजेदार बनी रहती है . मेरा आहार साफ-सुथरा और प्रोटीन युक्त होता है, जिसमें घर का बना ताजा खाना शामिल होता है . मैं चीनी और प्रोसेस्ड फूड से जितना हो सके बचता हूँ . मानसिक फिटनेस भी उतनी ही जरूरी है, इसलिए मैं माइंडफुलनेस का अभ्यास करता हूँ और लंबे शूट के दौरान छोटे ब्रेक लेकर खुद को तरोताज़ा करता हूँ . विश्व स्वास्थ्य दिवस हमें याद दिलाता है कि छोटी-छोटी निरंतर कोशिशें बड़ा फर्क लाती है

'भूत बंगला' के पेड प्रिव्यूज 16 अप्रैल से शुरू

बॉलीवुड फिल्मकार एकता कपूर की अक्षय कुमार स्टारर फिल्म 'भूत बंगला' का पेड प्रिव्यू 16 अप्रैल की रात नौ बजे से शुरू होने जा रहा है.

बहुप्रतीक्षित हॉरर कॉमेडी 'भूत बंगला' अब अपनी रिलीज़ के बेहद करीब है. उम्मीद है कि यह फिल्म दर्शकों की उम्मीदों से भी बढ़कर होगी. बढ़ते एक्साइटमेंट के साथ, यह फिल्म मनोरंजन का एक ऐसा पैकेज लाने का वादा करती है जो पहले कभी नहीं देखा गया. 16 अप्रैल 2026 की रात नौ बजे से शुरू होने वाले पेड प्रिव्यू के साथ यह देखना दिलचस्प होगा कि फिल्म में क्या खास है और लोगों के पहले रिएक्शंस कैसे आते हैं.

एकता कपूर ने कहा, 'अपने डिस्ट्रीब्यूशन पार्टनर्स और बड़े मार्केट के एग्जीबिटर्स के साथ लंबी चर्चा और उनकी कई गुजारिशों के बाद, हमने भूत बंगला की रिलीज को एक हफ्ते आगे बढ़ाने का फैसला किया है. हम दर्शकों को सिनेमा का एक बेहतरीन अनुभव देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं और हमें भरोसा है कि इस फैसले से फिल्म को फायदा होगा और थिएटर्स में इसे एक लंबी और शानदार दौड़ मिलेगी! धुरंधर: द रिवेंज, इस वक्त बॉक्स ऑफिस पर कमाल का प्रदर्शन कर रही है, जो कि पूरी फिल्म इंडस्ट्री और प्रोड्यूसर्स के लिए बहुत अच्छी खबर है. हमारे एग्जीबिटर्स को लगा कि इस फिल्म को एक साफ और बिना किसी रुकावट वाला हफ्ता देना पूरी इंडस्ट्री के लिए सबसे बेहतर होगा.' एकता कपूर ने कहा, 'फिल्म भूत बंगला को एक हफ्ता आगे बढ़ाकर, हम यह पक्का कर रहे हैं कि दोनों फिल्मों को वह थिएटर स्पेस, मार्केटिंग फोकस और दर्शकों का ध्यान मिले जिसके वे हकदार हैं!

स्टाइल आइकन रितिक बने ऑन ब्रांड के एम्बेसडर

देश की प्रमुख इनरवियर कंपनी लक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने अपने प्रीमियम वियर ब्रांड ऑन के लिए बॉलीवुड अभिनेता रितिक रोशन बने ऑन ब्रांड के एम्बेसडर, प्रीमियम सेगमेंट पर फोकस तेज को ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त करने की घोषणा की है. इस कदम के जरिए कंपनी भारत के तेजी से बढ़ते प्रीमियम इनरवियर और थर्मल वियर बाजार में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है.

कंपनी की यह साझेदारी ऑन ब्रांड की पहचान को मजबूत करने और खासकर युवा एवं महत्वाकांक्षी उपभोक्ताओं तक पहुंच बढ़ाने की रणनीति का हिस्सा है. एक आधुनिक लाइफस्टाइल ब्रांड के रूप में पेश किया गया है, जो कंफर्ट, परफॉर्मेंस और स्टाइल का संतुलित अनुभव देता है. अशोक तोड़ी चेयरमैन, लक्स इंडस्ट्रीज ने कहा कि यह सहयोग कंपनी के पोर्टफोलियो में मजबूत और प्रेरणादायक ब्रांड बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है.

उन्होंने कहा कि ऑन नई पीढ़ी के लिए आधुनिक डिजाइन, बेहतर आराम और स्टाइल प्रदान करने की कंपनी की सोच का प्रतिनिधित्व करता है, और रितिक रोशन की व्यक्तित्व और फिटनेस ब्रांड के मूल्यों से मेल खाती है. वहीं, साकेत तोड़ी, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, लक्स इंडस्ट्रीज के अनुसार, इस साझेदारी से

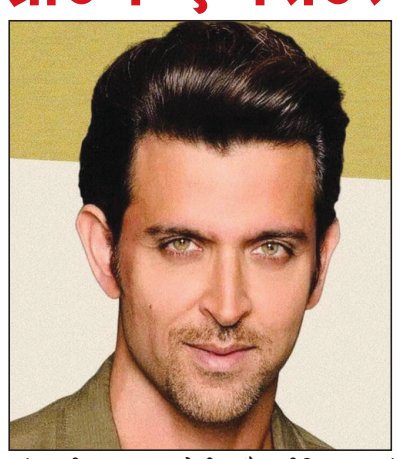

ब्रांड की दृश्यता बढ़ेगी और प्रीमियम एवं परफॉर्मेंस-ओरिएंटेड इनरवियर की तलाश कर रहे ग्राहकों से मजबूत जुड़ाव बनेगा.

'एक दिन' बने जुनैद की डेब्यू फिल्म : आमिर

बॉलीवुड स्टार आमिर खान चाहते थे कि फिल्म 'एक दिन' उनके पुत्र जुनैद खान की डेब्यू फिल्म हो.

आमिर खान प्रोडक्शंस की आने वाली फिल्म 'एक दिन' को लेकर दर्शकों के बीच लगातार जबरदस्त क्रेज बना हुआ है. एक प्यारी और दिल छू लेने वाली प्रेम कहानी का वादा करने वाली इस फिल्म ने अपने शानदार ट्रेलर और रूहानी संगीत के जरिए पहले ही लोगों के दिलों को छू लिया है. ट्रेलर में जहां हमें जुनैद खान एक सच्चे और प्यारे प्रेमी के रूप में नजर आ रहे हैं, वहीं आमिर खान हमेशा से चाहते थे कि जुनैद अपना डेब्यू मंसूर खान के साथ करें. इंडस्ट्री के एक सूत्र के अनुसार, 'आमिर खान चाहते थे कि 'एक दिन' जुनैद खान की डेब्यू फिल्म हो, बिल्कुल वैसे ही जैसे उन्होंने खुद मंसूर खान के डायरेक्शन में 'कयामत से कयामत तक' से अपनी शुरुआत की थी. इसी तरह, आमिर चाहते थे कि उनका बेटा भी मंसूर खान के निर्देशन में डेब्यू करे. उनकी हमेशा से इच्छा थी कि जुनैद अपने करियर की शुरुआत एक रोमांटिक फिल्म से करें, खासकर 'महाराज' के लिए जुनैद को मिली तारीफों के बाद.'

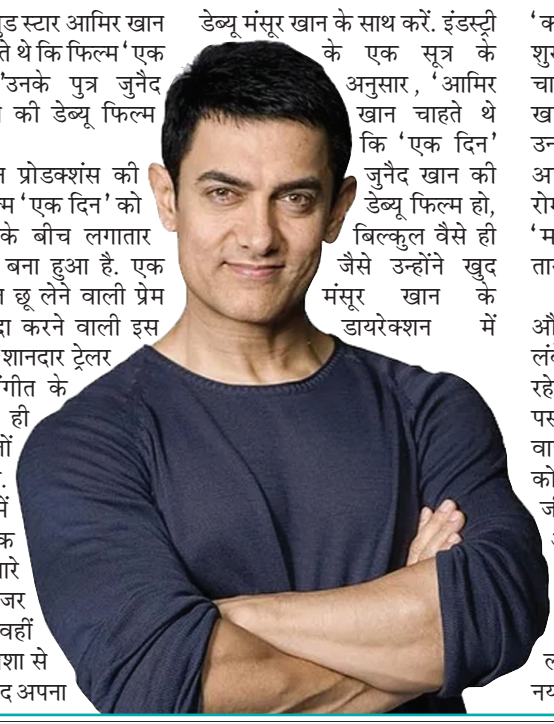

'एक दिन' के जरिए आमिर खान और फिल्म मेकर मंसूर खान एक लंबे अंतराल के बाद फिर से साथ आ रहे हैं, जिससे हिंदी सिनेमा की सबसे पसंदीदा जोड़ियों में से एक की वापसी हो रही है. इस जोड़ी ने दर्शकों को 'कयामत से कयामत तक', 'जो जीता वही सिकंदर', 'अकेले हम अकेले तुम' और 'जाने तू... या जाने ना' जैसी यादगार फिल्में दी हैं. 'एक दिन' के साथ यह जोड़ी एक बार फिर रोमांस जॉनर में लौट रही है, जिससे फैंस के बीच नया उत्साह पैदा हो गया है.